9

आदमी जिसने परवाह की

(2 राजाओं 6:1-7)

लेखक कहानियों को उनकी लम्बाई से बांटते हैं। कई कहानियों को ''लघु कहानियां'' कहा जाता है। यदि कहानियां बहुत ही छोटी हों तो उन्हें ''लघु-लघु कहानियों'' का नाम दिया जाता है। यह पाठ एलीशा की ''लघु कहानी'' पर केन्द्रित है, जिसे हम उच्च स्थानों पर बैठे सरकारी अधिकारियों के साथ व्यवहार के लम्बे वृत्तांतों के बीच में पाते हैं। मैंने अपनी पुस्तक में इसे यहां इसलिए रखा है क्योंकि यह आराम से यहां पिछले पाठ से मिल जाता है। मैंने उस पाठ को ''आदमी जिसने बांटा'' और इसे ''आदमी जिसने परवाह की'' नाम दिया है।

विवरण की संक्षिप्तता और इसके ''महत्वहीन'' लगने वाली समस्या की बात करता प्रतीत होने के कारण, ''एलीशा के बारे में बताई गई कहानियों में सबसे घिसी-पिटी'' कहा गया है।[1] एलीशा के जीवन पर कई अंक कहानी पर टिप्पणी करने की परवाह नहीं करते, जबकि अन्य इसे एक या दो वाक्यों में निपटा देते हैं। परन्तु जैसा बर्टन कॉफ़मैन ने ध्यान दिलाया है, ''यह वास्तव में उस अद्‌भुत नबी द्वारा किए गए सबसे महत्वपूर्ण आश्चर्यकर्मों में से एक है। क्यों? यह निर्धनों के दिलों पर दबाव डालने वाली समस्याओं के लिए परमेश्वर की चिंता पर ज़ोर देता है।''[2]

उस समय की ''घिसी-पिटी'' समस्या

मनुष्य जो कर सकता है

हमारी कहानी के आरम्भ में एलीशा फिर ''भविष्यवक्ताओं के चेलों'' में से कुछ के साथ साथ यरीहो की पाठशाला वाले चेलों के साथ था (देखें 2:5), जो यरदन नदी के निकट था (देखें 6:2)। एलीशा की सेवकाई की सफलता उस तथ्य में देखी जाती है कि छात्रों को सहूलियत की कमी थी। ''और भविष्यवक्ताओं के चेलों में से किसी ने एलीशा से कहा, यह स्थान जिस में हम तेरे सामने रहते हैं, वह हमारे लिए संकेत है'' (6:1)। विवाहित छात्र स्पष्टतया अलग निवास में रहते थे (देखें 4:1-7), पर अविवाहित नबी एक ही जगह रहते होंगे। कम से कम उनके मिलने और खाने की जगह एक थी (देखें 4:38-44)। भवन अब उनकी संख्या के हिसाब से छोटा पड़ गया था। ऐसी समस्या का होना अच्छी बात है, पर यदि बढ़ौतरी होती रहे तो इस पर ध्यान देना आवश्यक है।

नबियों के चेलों के पास ठेकेदार को देने या बड़ी इमारत बनाने के लिए पैसे नहीं थे। तो फिर वे इस समस्या का समाधान कैसे कर सकते थे? स्वयं बना कर। उन्होंने एलीशा से कहा, ''इसलिये हम यरदन तक जाएं, और वहां से एक एक बल्ली लेकर, यहां अपने रहने के लिये एक स्थान बना लें'' (आयत 2क)। प्राचीन लेखकों के अनुसार यरदन नदी के तटों पर पेड़ और

झाड़ियां बहुतायत से होती थीं, जिनमें मुख्य रूप से विलो, पॉपलर और झाऊ के पेड़ होते थे।[3] ध्यान दें कि इन छात्रों ने यह नहीं सोचा कि वे ''इतने अच्छे'' हैं कि वे अपने जीवन परमेश्वर को देने के कारण हाथ से काम नहीं कर सकते। आराधना के लिए कई भवनों का निर्माण उन्हीं लोगों द्वारा किया गया है, जिन्हें उन भवनों का इस्तेमाल करना था।

एलीशा ने उन से कहा, ''अच्छा जाओ'' (आयत 2ख)। परन्तु चेलों में से एक ने उससे उनके साथ जाने का आग्रह किया: ''अपने दासों के संग चलने को प्रसन्न हो'' (आयत 3क)। याचिका से सम्मान और लगाव का संकेत मिलता है। (ऐसे गुरु भी होते हैं जिनकी संगति उनके चेले पसन्द *नहीं* करते।) नबी ने उत्तर दिया, ''चलता हूं'' और ''वह उनके संग चला'' गया (आयतें 3ख, 4क)।

यरदन नदी पर पहुंचकर वे नदी के निकट लकड़ी की एक बड़ी इमारत बनाने के लिए ''लकड़ी काटने लगे'' (आयत 4ख)। सम्भवतया एलीशा चेलों के साथ काम करता होगा। कालांतर में जब प्रचारक लोग किसानों के बीच सुसमाचार सभाएं करते थे तो आम तौर पर वे दिन भर खेतों में काम करते और रात को वचन सुनाया करते थे।

मनुष्य जो नहीं कर सकता

मैं कुल्हाड़ियों की ठक-ठक को सुन सकता हूं और चेलों के माथे से गिरता पसीना देख सकता हूं। अचानक उनमें से किसी की चीख आती है। ''जब एक जन बल्ली [बनाने के लिए पेड़] काट रहा था, तो कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर जल में गिर गई'' (आयत 5क)। यह कोई नई बात नहीं थी (देखें व्यवस्थाविवरण 19:4, 5)। आम तौर पर यह कोई समस्या भी नहीं थी। जब मैं जवान था और आग जलाने के लिए पेड़ काटता था तो कई बार मेरी कुल्हाड़ी का सिरा निकलकर गिर जाता था। मैं उस सिरे को ढूंढ़ता और उसे कस कर मुट्ठी पर लगाता और फिर लकड़ियां काटने लगता। परन्तु इस अवसर पर चेला नबी के पास पेड़ काट रहा था और कुल्हाड़ी का सिरा ''यरदन के [गंदले] जल में गिर'' गया (2 राजाओं 6:5ख)। वह आदमी एलीशा के सामने चिल्लाने लगा, ''हाय! मेरे प्रभु, वह तो मंगनी की थी'' (आयत 5ग)।

आपके लिए हो सकता है कि यह बड़ी समस्या लगे या न, पर उस आदमी के दृष्टिकोण से देखें। वह पास की दुकान से भाग कर उसके स्थान पर नई कुल्हाड़ी नहीं खरीद सकता था। उस देश में लोहे के सामान की कमी होती थी (देखें 1 शमुएल 13:22) और वह भी बुहत महंगा मिलता था। इसके अलावा यदि कुल्हाड़ियां बहुतायत में होती भी थीं तौ भी वह उन्हें खरीदकर उसकी जगह लगाने की स्थिति में नहीं था। उसके लिए कुल्हाड़ी उद्धार लेना आवश्यक था। अनुवादित शब्द ''मंगनी की'' का अर्थ है ''मांग कर लाई।'' उस आदमी को कुल्हाड़ी उधार लेने के लिए उसके मालिक के पास से *मांगना* पड़ा था और अब यह खो गई थी!

आज कुछ लोग किसी से उधार ली गई चीज़ की परवाह नहीं करते, पर मूसा की व्यवस्था में उधार ली गई चीज़ को बड़ी गम्भीरता से लिया गया था। यदि किसी की उधार की चीज़ खो जाए तो उसे क्षतिपूर्ति करनी पड़ती थी (देखें निर्गमन 22:14) यानी ऐसी बात जिसे निर्धन चेला नहीं कर सकता था। इस कारण उसे ''उसकी कीमत चुकाने के लिए दास के रूप में काम करना पड़ना था।''[4] आमोस 2:6 के अनुसार इस्राएल में दुष्ट लोगों में ''दरिद्र को एक जोड़ी जूतियों''

से ऊपर नहीं बेचा जाता था। इस जवान के लिए यह एक बहुत ही वास्तविक और बहुत गम्भीर समस्या थी। इस कारण वह एलीशा के सामने चिल्लाया।

एलीशा ने उस आदमी से पूछा, ''वह कहां गिरी''? (2 राजाओं 6:6क)। कई बार तो प्रभु इस नबी को अलौकिक ज्ञान देता था (5:25, 26; 6:8-12) पर कई बार नहीं (4:27)। स्पष्टतया प्रभु ने नबी को यह जानकारी नहीं दी थी कि वह प्राकृतिक साधनों से सुरक्षित हो सके। इस कारण एलीशा ने दुखी चेले से पूछा कि कुल्हाड़ी का सिरा पानी में कहां गिरा था।

उस आदमी ने वहीं पर इशारा किया जहां उस ने बुलबुला देखा था। ''जब उस ने स्थान दिखाया, तब उस [एलीशा] ने [पास के एक पेड़ से] एक लकड़ी काटकर वहां'' जहां उसने संकेत किया था नबी ने डाल दी (6:6ख)। जब उसने लकड़ी डाली तो वहां एक अनोखी बात हुई। वचन कहता है कि इस कार्य से ''वह लोहा पानी पर तैरने लगा'' (आयत 6:6ग)।

संदेहवादियों ने इस बात की तार्किक व्याख्या जानने के लिए कि यरदन के तट पर उस दिन क्या हुआ था परिश्रम किया है। वे सुझाव देते हैं कि किसी प्रकार एलीशा ने उस कुल्हाड़ी के सिरे को छड़ी के साथ ''पकड़कर'' निकाल लिया।[5] जी. रालिंसन का उत्तर सही है: ''पवित्र लेखकों को हाथ के दक्षता के कामों को ही लिखने का ध्यान नहीं होता।''[6]

परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक की भाषा स्पष्ट थी: भारी, ठोस लोहे का सिरा *तैर रहा था*। यह पानी में से उछल आया और कॉर्क की तरह अटक गया! मैंने नदियों में कई पत्थर फैंके हैं और उनमें से कभी कोई ऊपर आकर तैरा नहीं है। मैंने अपने हाथ से एक छड़ी छोड़ दी और दो मेरे हाथ में से निकल गईं और पानी में गिर गईं पर मैंने उन्हें कभी दोबारा नहीं देखा। संदेह न करें कि यह एक वास्तविक आश्चर्यकर्म था। यह पक्का जानें कि यह सरल और दिखावे से रहित आश्चर्यकर्म था, पर था आश्चर्यकर्म!

अपनी आदत के अनुसार एलीशा ने आश्चर्यकर्म में इसके पाने वाले को भी मिला लिया। उसने जवान से कहा, ''उसे उठा ले'' (आयत 7क)। इस प्रकार से उस आदमी को पता चल गया कि इसमें कोई प्राकृतिक शक्तियां काम नहीं कर रहीं। वह चेला पानी में कूद गया और ''उस ने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया'' (आयत 7ख)। धन्यवाद व्यक्त करने और कुल्हाड़ी को फिर से जोड़ने के बाद वह आदमी काम पर लग गया होगा, एक और पेड़ को काटने के लिए, पर इस बार वह नदी से दूर ही रहा होगा!

आज की घिसी-पिटी समस्या

क्या ऐसा हो सकता है कि आपकी समस्याएं इतनी घिसी पिटी हैं कि उन्हें प्रभु के सामने ले जाना बेकार है? शायद आपने तर्क दिया हो कि ''उसे सारे संसार का ध्यान रखना और राष्ट्रीय समस्याओं और अन्तर राष्ट्रीय समस्याओं से निपटना आवश्यक है। मेरे लिए छोटी-छोटी समस्याओं के लिए उसे परेशान करना गलत होगा।'' हमारी कहानी से सबक लें कि यदि परमेश्वर के बच्चों को कोई परेशानी है तो वह इस बात से चिन्तित होता है।

मेरे यह लिखते समय मेरी पत्नी और मैं अपनी बेटी एंजी, उसके पति डैन और उनके नये गोद लिए बच्चे इलाइजा के साथ समय बिता रहे हैं। बीच बीच में, इलाइजा चिल्लाता है (जैसे बच्चे करते हैं)। शायद उसे भूख लगी है या उसका डाइपर बदलने वाला है या वह यूं ही

चिल्ला रहा होगा। क्या आपको लगता है कि उसकी मां और उसका पिता उसे यह कहते हुए डांटेंगे, ''यह चिल्लाना रोज़ की बात हो गई है?'' आप जानते हैं कि वे उसे नहीं डांटेंगे। वे उसे गोद में उठाते और चुप कराते और उसकी आवश्यकताओं को पूरी करते हैं, चाहे वे कितनी भी ''छोटी'' क्यों न लगती हों। ''देखो, पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं'' (1 यूहन्ना 3:1क)।

संसार को देखें। परमेश्वर ने ''छोटी-छोटी'' चीज़ों का भी उतना ही ध्यान रखा है जितना ''बड़ी'' चीज़ों का। तितली के पंख उतनी ही सावधानी से बनाए गए हैं जितनी सावधानी से आकाश का सबसे शानदार तारा।[7] रुककर इस पर विचार करें कि वास्तव में प्रभु के लिए कोई भी समस्या ''बड़ी'' नहीं है, चाहे वे वैश्विक प्रभाव ही क्यों न हों। किसी विश्वासी के सामने आने वाली ''रोज़ की'' समस्या उसके लिए उतनी ही बड़ी है जितनी किसी अविश्वासी के सामने ''भुकम्प'' का संकट।

एक के बाद एक आयत हमें हर समस्या उसके पास लाने के लिए प्रोत्साहित करनी है चाहे उनमें से कुछ समस्याओं को ''रोज़ की'' कहा जाए। पौलुस ने कहा, ''*हर बात* में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं'' (फिलिप्पियों 4:6)। पतरस ने लिखा, ''और *अपनी* सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है'' (1 पतरस 5:7)।

सारांश

यदि आप परमेश्वर की संतान हैं तो प्रभु आपकी किसी समस्या को ''रोज़ की'' के रूप में नहीं देखता। परमेश्वर ''सहायता के लिए छोटी से छोटी प्रार्थना का उत्तर देगा और यदि हम उससे प्रेम करते हुए उस पर भरोसा रखेंगे तो हमारी छोटी से छोटी आवश्यकता को भी पूरा करेगा।''[8]

परमेश्वर को विशेषकर हमारी *आत्मिक* समस्याओं का ध्यान है, सांसारिक सोच के अनुसार चाहे वे कितनी भी ''छोटी'' क्यों न लगें। यदि कोई आत्मिक समस्या आपको नीचे नर्क में ले जा रही है, तो मेरी प्रार्थना है कि आप पश्चात्ताप और विनम्रता में परमेश्वर के साथ जाएं ताकि वह आपको ऊपर उठा सके। वह जिसने कुल्हाड़ी के सिरे को तैरने के लिए लगा दिया आपके पापों को दूर और दूर ''उड़ा'' ले जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट सी. डंटन, ''किंग्स,'' *लेमैन'स बाइबल कमैंट्री,* अंक 7 (रिचमंड, वरजीनिया: जॉन नॉक्स प्रैस, 1964), 83. [2]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन एंड थेलमा बी. कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन सेकंड किंग्स,* जेम्स बर्टन कॉफ़मैन कमैंट्रीज़, दि हिस्टोरिकल बुक्स, अंक 6 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1992), 77. [3]जी. रॉलिंसन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *फर्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ़ एस. एक्सल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 119. रॉलिंसन ने जोसेफस *वार्स* 4.8.3 एंड स्ट्रेबो *ज्योग्राफी* 15.1.2.41 से उद्धृत किया। [4]जे. रॉबर्ट वेनॉय, नोट्स ऑन 2 किंग्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 533. जे. एस. स्टेक, *इन दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो., संक. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:71 में सुझाया गया। [5]कुछ ''व्यख्याओं'' में माना जाता है कि पानी

इतना साफ़ था कि एलीशा देख सकता था कि कुल्हाड़ी का सिरा कहां गया है। यदि ऐसा था तो शास्त्र इसे खुद निकाल सकता था। [6]रावलिनसन, 120. [7]जे. जी. बी, *शॉर्ट मेडिटेयशन ऑन एलिशा* (न्यू यॉर्क: लॉयजेक्स ब्रदर्स, तिथि नहीं), 39. [8]एलन जे. फ्लेचर, *एलिशा, दि मरिकल प्रोफेट* (वाशिंगटन, डीसी: रिव्यू एंड हेरल्ड पब्लिशिंग एसोसिएशन, 1960), 43.